वह लड़का जिस ने समुद्र रोका

चित्र: टॉमस लॉकर, पुनर्कथन: लेनी होर्ट, हिंदी: नीला त्रिवेदी

वह लड़का जिस ने समुद्र पीछे रोका

वह लड़का जिस ने समुद्र पीछे रोक लिया

चित्र: टॉमस लॉकर
पुनर्कथन: लेनी होर्ट
हिंदी अनुवाद: नीला त्रिवेदी

पीटर को अभी-अभी अपने कमरे में भेज दिया गया था और दरवाजे पर कोई दस्तक दे रहा था। उसने सोचा उस के पापा होंगे लेकिन वह तो उस की दादी और उन की बिल्ली थी। "मै ने सोचा एक कहानी तुम्हारा मन सहला देगी," उन्होंने कहा और वे एक कुर्सी पे आराम से बैठ गईं अपनी बिल्ली, 'विलहेलमिना', को गोद में लेकर।

जब मैं तुम्हारी उम्र की थी, दादी ने कहा, तुम्हारे जैसा एक लड़का, जैन, इसी शहर में रहता था। उसके पिता, तुम्हारे पिता की तरह शराब बनाने का काम करते थे। जैन एक बुरा लड़का नहीं था, लेकिन हम उसे अच्छा भी नहीं कह सकते थे।

जब उसे पढ़ाई करनी चाहिए थी वह हमेशा शिकार करने चला जाता था या फिर समुद्री दीवार/डाइक्स को देखता रहता था।

और इससे बुरा, वह बार-बार भागता हुआ शहर आता और पहरेदारों को सचेत करता क्यों कि उसे लगता था उसने दुश्मन के सैनिक देखे या समुद्र के सांप।

एक रविवार के दिन जैन ने अपनी मां से अनुमति मांगी कि उसे चर्च जाने के बदले श्री स्काईलेट को कुछ पढ़कर सुनाने के लिए जाने दिया जाए। श्री स्काईलेट अंधे थे और एक मिल चलाते थे। वे नहर से पाँच मील आगे रहते थे। उसकी मां ने इस नेक काम के लिए उसे आशिर्वाद दिया और अच्छा सा खाना बनाकर उसे भेज दिया। श्री स्काईलेट के लिए रुबार्ब का पाई भी दी जो उन्हें बहुत पसंद थी। जैन के साथ उसका कुत्ता भी दुलकता हुआ उस के पीछे पीछे गया।

जैसे ही जैन अपनी मां की आँखों से ओझल हुआ वह एक राजा की प्रतिमा के नीचे बैठ कर पाई खुद खा गया। उसने अपनी गुलेल निकली और एक टुकड़ा प्रतिमा के सिर पर उड़ाया, कबूतरों के लिये। कप्तान ब्लॉवेल्ट ने उसे एक पत्थर विद्यालय की खिड़की पर मारते देखा। ऐसी अफ़वाह थी कि वे एक समुद्री डाकू थे। जो भी हो, वे अंतिम व्यक्ति होंगे जो किसी उपद्रव करने वाले की शिकायत करते। जैन ने अपनी गुलेल अपनी जेब में रख ली और गिलहरियों का शिकार करने जंगल में चला गया।

उस लड़के ने अपनी मां के बनाए खाने की बिल्कुल कद्र नहीं की जो उन्होंने बड़ी मेहनत से बनाया था। उसने वह सारा खाना अपने कुत्ते को खिला दिया। उसने बड़ी सी आग जलाई और एक गिलहरी, जिस का उसने शिकार किया था, उस को अच्छी तरह भूनने लगा।

उस दावत के बाद, और पूरे दिन की शैतानियों के बाद, वह लड़का थक गया था। वह चलते चलते समुद्र की डाइक्स तक गया जहाँ वह समुद्र की गीली नमक से भरी हवा को महसूस कर सके और समुद्री डाकू और उन के जहाजों के सपने देख सके। वह अपनी पसंदीदा जगह पर लेट गया। कुछ ही देर बाद उसे आश्चर्य हुआ कि पानी की पतली सी धार उस की पीठ पर बह रही है। उसने ध्यान से देखा तो अचंभित हो गया कि महासागर एक समुद्री दीवार के एक छेद से अंदर बह रहा है। जैन जैसा शैतान बच्चा भी यह जनता था कि अगर इस रिसाव को जल्दी बंद नहीं किया गया तो धीरे धीरे छेद बड़ा हो जाएगा और अगर दीवार गिर गई तो डराने वाली बाढ़ पूरे शहर को डूबो देगी।

वह रिसाव को नजरअंदाज नहीं कर सकता था। जैन को पता था कि वह मुसीबत में पड़ जाएगा जब उसकी मां को पता चलेगा कि वह श्री स्काईलेट के घर नहीं गया था। लेकिन फिर भी वह सहायता मांगने शहर गया। उसने कॉन्स्टेबल और स्कूल मास्टर को एक साथ बात करते पाया और वह चिल्लाया कि बांध में रिसाव हो रहा है। कॉन्स्टेबल ने उसे कहा जाओ वापस और समुद्री दैत्यों को देखो। स्कूल मास्टर ने कहा झूठ बोलने वाले लड़के, जो चर्च नहीं जाते, उन के साथ हमेशा बुरा ही होता है। जैन बार बार कहता रहा कि वह सच बोल रहा है तो कॉन्स्टेबल ने उसे वापस डाइक के पास जाने को कहा और वचन दिया कि वह किसी को सहायता के लिए भेजेगा।

लेकिन जब वह लड़का और उसका कुत्ता डैम के पास वापस पहुंचे तो उनके पीछे कोइ नहीं आया। और वह रिसाव और भी बढ़ गया था। वह छेद अभी छोटा ही था लेकिन पानी जो उस में से बह रहा था वह बूंद बूंद नहीं था। जैन ने उस छेद को मुट्ठी भर धूल से भरने की कोशिश की लेकिन दूसरे ही क्षण वह बाहर निकल आई। फिर उसने अपना रुमाल निकाल कर उस में घुसेड़ के उसे बंद करने की कोशिश की। लेकिन जैसे ही उसने रुमाल छोड़ दिया वह भी निकल के बाहर आ गया। वह सोच रहा था, काश वह किसी तरह से पानी को रोक सके जब तक सहायता आएगी.... उसने रुमाल को अपनी उंगली पे लपेट के उस मिट्टी की दीवार के छेद में घुसेड़ दिया। सूर्य डूब रहा था, लेकिन फिलहाल पानी का रिसाव रुक गया था।

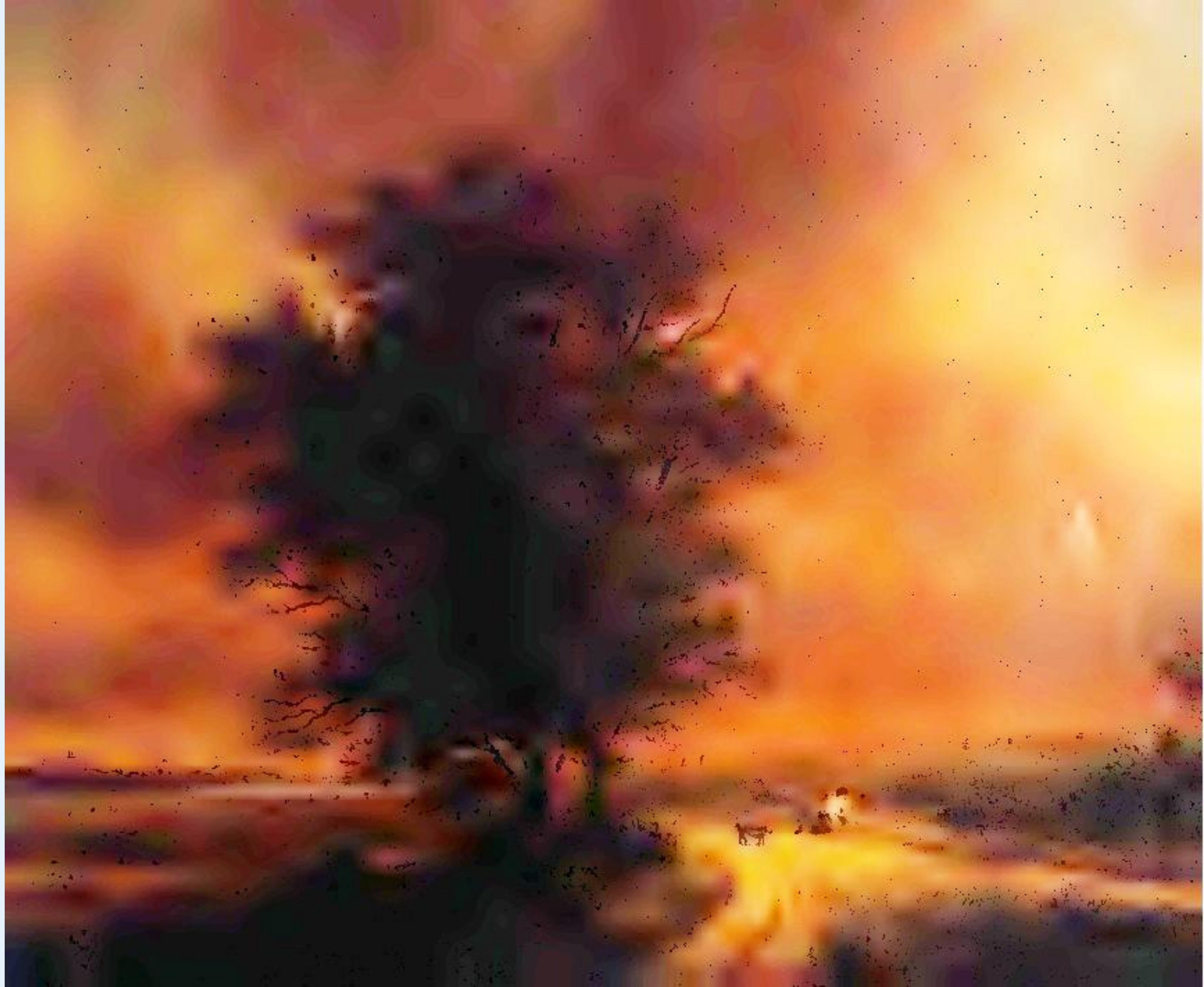

तूफानी बादल उमड़ रहे थे और शाम को ठंड बढ़ रही थी। जैन ने कांस्टेबल और स्कूल मास्टर से उम्मीद छोड़ दी थी। लेकिन उसे पता था की कोई तो उस तरफ ज़रूर आयेगा। उसे वे कहानियाँ याद आई जहां वफादार कुत्ते अपने जख्मी मालिकों के लिए सहायता ले कर के आते थे। वह खुश था कि उस का कुत्ता अभी भी उस के पास ही था। जिस हाथ से उस ने समुद्र को रोक रखा था वह हाथ सुन्न हो गया था। दूसरे हाथ से उस ने अपने कुत्ते को गले लगाया। "कोई न कोई जरूर आएगा," उस ने कहा, "और सोचो हम कैसे महानायक बन जायेंगे।" लेकिन इस बात पर उसे पक्का विश्वास नहीं था।

आसमान में बदलो की गर्जना हो रही थी और मीनार की घड़ी में घंटियाँ बज रही थी। रात के बारह बज रहे थे। तभी उसने किसी के पदचाप सुने। कुत्ता गुर्राने लगा और बिजली ने एक चेहरा चमका दिया। वह था कप्तान ब्लॉवेल्ट का। भगवान ही जाने वह किस शैतानी के लिए इस समय तक जाग रहा था।

उस ने जैन की बात अच्छी तरह से सुनी और सहायता लाने के लिए भाग गया।

कप्तान शहर में लड़खड़ाते हुए पहुंचे और "गार्ड! गार्ड!" चिल्लाने लगे। गार्ड आए और उन्हें चिल्लाने के लिए बंदी बना लिया। कॉन्स्टेबल ने सुझाया कि यही वह आदमी हो सकता था जिसने सुबह स्कूल की खिड़की का काँच तोड़ा हो जब सब अच्छे लोग चर्च में थे। जैन की मां शोर सुन कर खिड़की के पास आई। वह गुस्से में थीं। उस का बेटा बिना इजाज़त के रात, घर के बाहर बीता रहा था। एक प्रार्थना भी की। उस का बेटा बड़े हो के उस आदमी जैसा न बने जिसे गार्ड ले जा रहे थे।

फिर सुबह हुई और तूफान भी थम गया। जैन कांप रहा था और बुखार का असर सिर पर चढ़ रहा हो ऐसा भी लग रहा था।

तभी स्कूल मास्टर की आवाज़ सुनाई दी, "बहुत खराब लड़का है। इस बार उसने अपनी मां को चिंता में डाल दिया है।" तभी उन की नज़र उस लड़के पर पड़ी जो बड़ी अजीब तरह से सो रहा था। वे बड़ी देर तक उस को देखते रहे। जैन ने उन्हें कारण समझाया। तब स्कूल मास्टर गये और कुछ लोगों को औज़ार के साथ ले आये। उस के बाद किसी को खयाल आया कि जैन के माता-पिता को खबर पहुंचानी चाहिए। जैन के माता-पिता को खबर मिलते ही वे वहाँ पहुंचे। उन्होंने उसे कंबल ओढ़ाया और गोदी में उठा के घर ले गये।

तुम्हारी उम्र में एक बच्चा कुछ भी झेल लेगा। जैन भी कुछ दिनों में ठीक हो गया। उस युवा नायक को सम्मानित करने के लिए शहर में एक उत्सव आयोजित किया गया जिस ने सब को बद से बद्तर बाढ़ से बचाया था। यह नोआ के समय के बाद सब से भयानक बाढ़ हो सकती थी। जब खाने का समय हुआ तो जैन वापस कहीं मिल नहीं रहा था! वह छुपते छुपाते श्री स्काईलेट के घर चला गया था, उन्हें किताबें पढ़ कर सुनाने के लिये। और वह अपने साथ उन के लिए रुबार्ब का पाई भी ले के गया था।

दादी की गोदी में बिल्ली तो खर्राटें ले रही थी लेकिन पीटर की आँखों से नींद उड़ चुकी थी। "चलो बेटा खाने की मेज़ पर आ जाओ," दादी ने अपने पोते से कहा। जब वे वह पहुंचे तो परिवार के सभी सदस्य वहां थे और मजे से बाते कर रहे थे। पीटर तो खाना खत्म करने का इंतजार भी नहीं कर पा रहा था क्यों कि उसे खुद डाइक्स पर नजर रखने जाना था।